व्याख्यान - 9

Page No. 2
Date: / /

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक विकास मे योगानन्द झा आरम्भिक कालक कोटि कथाकारक रूपमे समादृत अछि। हिनक कथा मनोवैज्ञानिक पद्धति पर आधारित आ सामाजिक चित्रण करबा मे प्रभावी भूमिकाक निर्वहन कएल अछि। हिनक दर्जनो कथाक प्रकाशन भेल अछि, जाहिमे 'कका कान धर', सन्यासी, आम खएबाक मुँह, बिसरल नहि छलैक, निरछलाहा आदि प्रमुख अछि। उपर्युक्त कथा सबमे 'आम खएबाक मुँह' सबसँ बेसी प्रसिद्ध आ चर्चित रहल अछि। हिनक कथाक प्रसंग मोहन भारद्वाज लिखैत छथि — "योगानन्द झाक 'आम खएबाक मुँह' मे दैहिक आकर्षण सँ उपजल रोमांस के सहज ढंग राखल गेल अछि। कथाके अभीष्ट सँत देबामे कथाकार सफल रहलाह अछि।"

एहि कथाक विषयवस्तुक प्रसंग शिव शंकर झा कान्त कहलन्हि जे — "योगानन्द झाक आम खएबाक मुँह सन कथाक कथावस्तु मे मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक परिवेशक चित्रण, जाहिमे सरसता सेहो अछि, आ संशय सेहो, कुतूहलता सेहो अछि आ प्रभावोत्पादकता सेहो।"

Page No.
Date: / /

मैथिली कथाक प्रारम्भिक पाँच दशकमे मनमोहन झा प्रथम एहन कथाकार भेलाह जे अपन कथामे कारुणिक दृश्यक उपस्थापन कएल। ओना हिनका सँ पूर्वक कथाकार लोकनि सेहो कथामे करुणाक व्यापार देखौलनि मुदा मनमोहन झाक कथा एहि सँ अपन फराक महत्व रखैत अछि। डॉ. भीमनाथ झाक शब्दमे "जतऽ प्रारम्भिक कथाकार लोकनि मिथिलाक सामाजिक विकृति पर विलाप कयने छथि, ततऽ मनमोहन झाक कथा पाठकक हृदयमे पैसि कऽ मानवीय वेदनाके साकार कयने छथि।" रुना, झगड़ू, चान्दकली, मीनाक्षी, भूख, वीर भोग्या, गंगापुत्र, सुकेशी आदि प्रमुख कथाक प्रणयनकर्ता मनमोहन झा कथा साहित्यक विकासमे एकटा विश्वसनीय आधार स्तम्भक रूपमे प्रतिष्ठापित भेलाह। हिनक कथाक महत्ता ओ कथा साहित्यक विकासमे हिनक योगदानक प्रसंग प्रसिद्ध साहित्यकार जीवकान्तक कथनके सेहो देखल जएबाक चाही - "मनमोहनक कथा मन-मोहक होइत अछि, तकर एक विशिष्ट कारण अछि ओ स्त्रीक मनोभाव ओ उत्कर्षगत तथा अधोगतिक बहुत विश्वसनीय चित्रण कयलनि अछि"।

क्रमशः

डॉ. पंकज कुमार
आतिथि शिक्षक